1857 की महान क्रान्ति या प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम

लार्ड कैनिंग के गवर्नर जनरल के रूप में शासन करने के दौरान ही 1857 की महान क्रांति हुई। इस विद्रोह का आरम्भ 10 मई, 1857 को मेरठ में हुआ, जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैल गया। इस क्रांति की शुरुआत तो सैन्य विद्रोह के रूप में हुई परन्तु कालान्तर में इसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया, जिसे भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम कहा गया।

1857 के विद्रोह के बारे में काफी विवाद हैं। ढेर सारे विद्वानों के ढेर सारे मत हैं, जो इस प्रकार हैं - (1) सिपाही विद्रोह, (2) स्वतंत्रता संग्राम, (3) सामन्तवादी प्रतिक्रिया, (4) जनक्रान्ति, (5) राष्ट्रीय विद्रोह, (6) मुस्लिम षड्यंत्र, (7) यह ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध था, (8) यह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष था।

1857 का विद्रोह कोई अचानक भड़का हुआ विद्रोह नहीं था, वरन् इसके पीछे अनेक आधारभूत कारण संलग्न हैं। इन विद्रोहों के पीछे अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक कारण जिम्मेवार हैं जो निम्नलिखित हैं -

(1) राजनैतिक कारण

राजनैतिक कारणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण के रूप में डलहौजी की 'गोद निषेध प्रथा' या 'हड़प नीति' को माना जाता है। इसने अपनी इस नीति के अन्तर्गत सतारा, नागपुर, सम्भलपुर, झांसी, बरार आदि राज्यों पर अधिकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप इन राजवंशों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ असन्तोष व्याप्त हो गया।

कुशासन के आधार पर डलहौजी ने हैदराबाद तथा अवध को अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन कर लिया जबकि इन स्थानों पर कुशासन फैलाने के जिम्मेदार स्वयं अंग्रेज थे। पंजाब और सिंध

Scanned with CamScanner

का विलय भी अंग्रेजी हुकूमत ने कूटनीति के द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य में कर लिया जो कालान्तर में विद्रोह का एक कारण बना।

पेंशनों एवं पदों की समाप्ति से भी अनेक राजाओं में असन्तोष व्याप्त था। उदाहरणार्थ नाना साहब को मिलने वाली पेंशन को डलहौजी ने अपनी नवीन नीति के द्वारा बन्द करवा दिया। मुगल सम्राट बहादुर शाह के साथ अंग्रेजों ने अपमानजनक व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे जनता क्षुब्ध हो गयी।

कुलीन वर्गीय भारतीय तथा जमींदारों के साथ अंग्रेजों ने बुरा सुलूक किया और उन्हें मिले समस्त विशेषाधिकारों को कम्पनी की सत्ता ने छीन लिया। ऐसी परिस्थिति में इस वर्ग के लोगों के असन्तोष का सामना भी ब्रिटिश सत्ता को करना पड़ा।

भारतीय सरकारी कर्मचारियों ने अंग्रेजों द्वारा सरकारी नौकरियों में अपनायी जाने वाली भेद-भाव पूर्ण नीति का विरोध करते हुए विद्रोह में सिरकत की।

कुल मिलाकर भारतीय जनता अंग्रेजों के बर्बर प्रशासन से तंग आकर उनकी दासता से मुक्त होना चाहती थी, इसलिए 1857 की क्रान्ति हुई।

(2) आर्थिक कारण

1857 की क्रान्ति के लिए जिम्मेदार आर्थिक कारण इस प्रकार हैं - भारतीयों के धन का निष्कासन तीव्र गति से इंग्लैण्ड की ओर हुआ। मुक्त व्यापार तथा अंग्रेजी वस्त्रों के भारत के बाजारों में अधिक मात्रा में आ जाने के कारण उसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहां के कुटीर उद्योगों पर पड़ा, जिस कारण से यहां के कुटीर एवं लघु उद्योग नष्ट हो गये। लार्ड विलियम बैंटिक ने अपने शासनकाल में बहुत सी माफी तथा इनाम की भूमि को छीन लिया, जिसका प्रभाव यह हुआ कि अनेक भारतीय जमींदार दरिद्र एवं कंगाल हो गये और इस तरह इन जमींदारों में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ असन्तोष व्याप्त हो गया। कृषि के क्षेत्र में अंग्रेजों की गलत नीति के कारण भारतीय किसानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी। अंग्रेजों द्वारा स्थापित स्थायी बन्दोबस्त, रैयतबाड़ी व्यवस्था के लिए प्रतिकूल साबित हुआ।

(3) धार्मिक कारण

कहने के लिए तो ब्रिटिश सत्ता धर्म के मामले में तटस्थ थी, पर इसने ईसाई धर्म के प्रचार में अपना पूर्ण सहयोग दिया। ईसाई मिशनरियों का दृष्टिकोण भारत के प्रति बड़ा तिरस्कारपूर्ण था। इसका एक मात्र उद्देश्य भारत में अपनी सर्वोच्चता प्रदर्शित करना था। अंग्रेज अपनी नीति के अनुसार अधिकांश भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़

Scanned with CamScanner

करना चाहते थे। वे इसाई धर्म स्वीकार करने वालों को सरकारी नौकरी, उच्च पद एवं अनेक सुविधाएं प्रदान करते थे। अंग्रेजों की इस नीति ने हिन्दू और मुसलमानों में कम्पनी के प्रति शंका भर दी।

(4) सामाजिक कारण

अंग्रेजों की अनेक नीतियां तथा कार्य ऐसे थे जिनसे भारतीयों में असन्तोष की भावना जन्म लेने लगी थी। अंग्रेजों को अपनी श्वेत चमड़ी पर बड़ा नाज था और वे भारतीयों को काली चमड़ी कह कर उनका उपहास किया करते थे। बैंटिक ने अपने शासन काल में सती प्रथा, बाल हत्या, नर हत्या आदि पर प्रतिबन्ध लगाकर तथा डलहौजी ने विधवा विवाह को मान्यता देकर रूढ़िवादी भारतीयों के अन्दर असन्तोष को भर दिया। अंग्रेजों द्वारा रेल, डाक एवं तार क्षेत्र में किये गये कार्यों को भारतीयों में मात्र ईसाई धर्म के प्रचार का माध्यम मानने के कारण अंग्रेजों के प्रति उनके मन में विद्रोही भावना भड़क उठी। शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों ने पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं साहित्य के विकास पर अधिक ध्यान दिया। ऐसे समय में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं साहित्य के विकास के क्षेत्र में कम्पनी सरकार द्वारा कोई विशेष परिवर्तन न किये जाने के कारण भारतीय बौद्धिक वर्ग अंग्रेजों के विरुद्ध हो गया। अंग्रेजों द्वारा लगान वसूली एवं विद्रोहों को कुचलने के समय भारतीयों को कठोर शारीरिक दण्ड एवं यातनायें दी गईं जिससे उनके अन्दर ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ घृणा एवं द्वेष की भावना भर गई।

विद्रोह के 'तात्कालिक कारणों' में चरबी लगे उन कारतूसों का जिक्र किया जाता है जिसे प्रयोग के लिए लार्ड कैनिंग के समय में सैनिकों को दिया गया था। गाय एवं सूअर की चर्बी से युक्त इस कारतूस को मुंह से खींचना पड़ता था। इससे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के सैनिकों में रोष व्याप्त हो गया, जिसका परिणाम शीघ्र ही देखने को मिला। 29 मार्च, 1857 को जब मंगल पाण्डे नाम के एक सैनिक ने बैरकपुर छावनी में अपने अफसरों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, पर ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों ने इस सैनिक को सरलता से नियंत्रित कर लिया और साथ ही उसकी बटालियन 34 एन. आई. को भंगकर दिया। 24 अप्रैल को 3 एल. सी. परेड मेरठ में 90 घुड़सवारों में से 85 सैनिकों ने नये कारतूस लेने से इंकार कर दिया। आज्ञा की अवहेलना के कारण इन 85 घुड़सवारों को कोर्ट मार्शल द्वारा 5 वर्ष का कारावास दिया गया। खुला विद्रोह 10 मई दिन इतवार को सायंकाल 5 व 6 बजे के बीच

Scanned with CamScanner